प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पादप रोग विज्ञान विभाग द्वारा ३७वां उच्च संकाय प्रशिक्षण कार्यक्रम

पंतनगर। ०७ सितम्बर, २०१८। पंतनगर विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के डा. आर.एस. सिंह, सभागार में आज 'भारतीय कृषि एवं कृषकों की आय वृद्धि हेतु पौध स्वास्थ्य प्रबंधन की आधुनिक तकनीक एवं कीट जोखिम विश्लेषण' विषय पर प्रशिक्षण आरंभ किया गया। इस २१-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अधिष्ठाता कृषि, डा. जे. कुमार के साथ नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज के पूर्व वैज्ञानिक, डा. डी.बी. पारख और हिसार विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष, डा. अनिल कुमार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। यह कार्यक्रम पादप रोग विज्ञान विभाग तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित था।

मुख्य अतिथि, डा. जे. कुमार ने कहा कि मौसम आधारित कृषि एवं पौध स्वास्थ्य की वजह से कभी-कभी किसानों की पूरी फसल बरबाद हो जाती है और उस दशा में किसानों की आय एक मजदूर से भी कम हो जाती है। अंततः इस सबका प्रभाव हमारे समाज और वातावरण पर पड़ता है। डा. कुमार ने कहा कि पौधा रोग प्रबंधन हेतु कृषि रसायन का इस्तेमाल करने से पहले कीट/रोग जोखिम विश्लेषण अवश्य कर लेना चाहिए जो कि कृषि में सतत् विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

विशिष्ट अतिथि, डा. पारख जोकि पंतनगर विश्वविद्यालय के पूर्व विद्यार्थी भी रहे हैं। उन्होंने अपने पूर्व अनुभवों का साझा करते हुये इस कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डाला और युवा वैज्ञानिकों को आगाह किया कि विज्ञान के सफलतम व आधुनिक प्रयोग हेतु ज्ञान को नवीनतम करते रहना अत्यन्त आवश्यक है, ताकि हम लगातार हो रहे परिवर्तन के प्रति जागरूक रहे। हिसार विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष, डा. अनिल कुमार ने भी प्रशिक्षणार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुये प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना की व प्रशिक्षणार्थियों को पौधों के स्वास्थ्य हेतु सचेत रहने को कहा।

निदेशक शोध, डा. एस.एन. तिवारी ने कीट संख्या विश्लेषण के बारे में विस्तार पूर्वक बताते हुये कहा कि वातावरणीय प्रदूषण को रोकने के लिये कृषि रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग को रोकना होगा और इसके लिये कीट जोखिम विलश्लेषण अत्यन्त आवश्यक है, जिससे कि यह पता चल सके कि कब और कितना कृषि रसायन का प्रयोग करना चाहिए, ताकि फसल और वातावरण दोनों सुरक्षित रहे।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में डा. करूणा विशुनावत ने सभी आगन्तुकों व मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुये विभाग की उच्च संकाय प्रशिक्षण गतिविधियों पर प्रकाश डाला और कहा कि कीट जोखिम विश्लेषण तथा पौध स्वास्थ्य प्रबंधन आज की आवश्यकता है क्योंकि इसके बिना हम देश की बढ़ती हुई जनसंख्या का पेट भरने के लिये सक्षम नहीं हो सकते। समारोह के अन्त में डा. के.पी. सिंह ने सभी उपस्थित गणमान्य वैज्ञानिकों, प्रशिक्षाणार्थियों एवं विद्यार्थियों को धन्यवाद दिया। इस कार्यक्रम में ११ राज्यों के २३ प्रशिक्षणार्थी प्रतिभाग कर रहें हैं।

प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र में संबोधित करते अधिष्ठाता कृषि, डा. जे. कुमार; साथ में मंचासीन डा. डी.बी. पास्ख एवं डा. अनिल कुमार और अन्य वैज्ञानिक।